पहले पड़ोसी भी परिवार होते थे, अब परिवार भी पड़ोसी हो गए

'पहले पड़ोसी भी परिवार होते थे, अब परिवार भी पड़ोसी हो गए '–यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि हमारे समाज की सच्चाई है। यह बदलाव हमें सोचने पर मजबूर करता है कि हम कहाँ जा रहे हैं और क्या खो रहे हैं।

रिश्तों की गर्माहट, अपनापन और एक-दूसरे के लिए समय निकालना–यही जीवन की असली खूबसूरती है। अगर हम इसे समझ जाएं और अपने जीवन में उतार लें, तो शायद हम फिर से उस दौर की खुशियों को महसूस कर सकें।

अंत में, यह हम पर निर्भर करता है कि हम अपने रिश्तों को कितना महत्व देते हैं। अगर हम चाहें, तो इस बदलते दौर में भी अपने संबंधों को मजबूत बना सकते हैं और अपने जीवन को अधिक खुशहाल बना सकते हैं। क्योंकि असली खुशी न तो बड़े घरों में है और न ही महंगी चीजों में–वह तो बस अपने लोगों के साथ, उनके प्यार और अपनापन में है।

समय के साथ बहुत कुछ बदलता है–रहन-सहन, सोच, रिश्ते और जीवन जीने का तरीका। लेकिन सबसे गहरा बदलाव अगर कहीं आया है, तो वह है हमारे रिश्तों में। एक समय था जब पड़ोसी सिर्फ आस-पास रहने वाले लोग नहीं होते थे, बल्कि हमारे अपने परिवार का ही एक हिस्सा होते थे। उनके सुख-दुख, हँसी-खुशी, त्योहार और परेशानियाँ–सब कुछ मिल-जुलकर साझा किया जाता था। और आज का समय देखिए, जहाँ एक ही घर के सदस्य एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं, जैसे वे भी सिर्फ 'पड़ोसी' बनकर रह गए हों।

यह बदलाव केवल परिस्थितियों का नहीं, बल्कि हमारी प्राथमिकताओं और सोच का परिणाम है।

पुराना समयः जब पड़ोसी ही परिवार थे–पहले के समय में मोहल्ले की पहचान ही उसकी एकता और अपनापन होती थी। एक घर में अगर कोई खुशी होती थी, तो पूरी गली में जश्न मनता था। किसी के यहाँ शादी हो, तो पड़ोसी ही सबसे पहले आगे आकर काम संभालते थे। महिलाएँ मिलकर पकवान बनाती थीं, बच्चे मिलकर खेलते थे, और पुरुष मिलकर आयोजन को सफल बनाते थे।

अगर किसी घर में कोई बीमार हो जाता, तो पड़ोसी दिन-रात सेवा में लगे रहते थे। उस समय 'अपना' और 'पराया' का फर्क इतना गहरा नहीं था। एक-दूसरे के घर बिना बताए आना-जाना, खाना-पीना और मदद करना एक सामान्य बात थी।

बदलता समय और बदलते रिश्ते–धीरे-धीरे जीवन की रफ्तार तेज होती गई। लोगों के पास समय कम होता गया और जिम्मेदारियाँ बढ़ती गईं। नौकरी, करियर, पैसा कमाने की दौड़ में इंसान इतना व्यस्त हो गया कि उसने अपने आस-पास के लोगों से दूरी बनानी शुरू कर दी।

अब हालात यह हैं कि हम अपने पड़ोसियों का नाम तक नहीं जानते। उनके जीवन में क्या चल रहा है, इससे हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। हम अपने घर के दरवाजे बंद करके, अपने ही छोटे से संसार में सीमित हो गए हैं।

तकनीक का असर–तकनीक ने हमारे जीवन को आसान जरूर बनाया है, लेकिन रिश्तों को कमजोर भी किया है। पहले लोग एक-दूसरे से मिलने के लिए समय निकालते थे, अब मोबाइल और सोशल मीडिया ने उस जगह को ले लिया है।

हम घंटों फोन पर बात कर सकते हैं, लेकिन पास में रहने वाले व्यक्ति से दो मिनट की बातचीत भी नहीं कर पाते। वर्चुअल दुनिया ने हमें असली रिश्तों से दूर कर दिया है।

परिवारों में दूरी–सबसे चिंताजनक बात यह है कि यह दूरी अब केवल पड़ोसियों तक सीमित नहीं रही, बल्कि परिवारों के अंदर भी आ गई है। एक ही घर में रहने वाले लोग अलग-अलग कमरों में, अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त रहते हैं।

पहले जहाँ परिवार के सभी सदस्य साथ बैठकर खाना खाते थे, दिनभर की बातें साझा करते थे, वहीं अब यह सब धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद कम हो गया है, भाई-बहनों के बीच अपनापन घट गया है।

ऐसा लगता है जैसे हम एक ही छत के नीचे रहकर भी एक-दूसरे के लिए 'पड़ोसी' बन गए हैं।

आजकल रिश्तों में स्वार्थ की भावना भी बढ़ती जा रही है। लोग तब तक ही किसी से जुड़े रहते हैं, जब तक उन्हें उससे कोई फायदा होता है। जैसे ही स्वार्थ खत्म होता है, रिश्ता भी खत्म हो जाता है।

पहले रिश्ते दिल से निभाए जाते थे, अब दिमाग से निभाए जाते हैं। पहले 'हम' की भावना थी, अब 'मैं' हावी हो गया है।त्योहारों का रंग भी कुछ और ही होता था। चाहे दीवाली हो, होली हो या ईद–हर त्योहार मिलकर मनाया जाता था। मिठाइयाँ एक-दूसरे के घर जाती थीं, और खुशियाँ भी बाँटी जाती थीं। किसी के घर में शादी हो, तो पूरा मोहल्ला जुट जाता था। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता था–सब मिलकर हर जिम्मेदारी उठाते थे।अगर किसी के घर में दुख आ जाए, तो पड़ोसी सबसे पहले साथ खड़े होते थे। वे केवल सांत्वना ही नहीं देते थे, बल्कि हर मुश्किल में कंधे से कंधा मिलाकर चलते थे। उस समय 'अपना' और 'पराया' का फर्क लगभग खत्म हो जाता था।

सामाजिक बदलाव और अकेलापन–इस बदलाव का एक बड़ा असर यह हुआ है कि लोग मानसिक रूप से अकेले होते जा रहे हैं। बाहर से भले ही सब कुछ ठीक दिखे, लेकिन अंदर से इंसान खालीपन महसूस करता है।

पहले अगर कोई दुखी होता था, तो उसके पास बात करने के लिए कई लोग होते थे। आज इंसान के पास सब कुछ है–पैसा, सुविधा, आराम–लेकिन अगर कुछ नहीं है, तो वह है सच्चा साथ।

क्या हम वापस लौट सकते हैं?–यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है–क्या हम फिर से उस समय में लौट सकते हैं, जहाँ पड़ोसी परिवार जैसे होते थे और परिवार एकजुट रहता था?

पूरी तरह से शायद नहीं, क्योंकि समय बदल चुका है। लेकिन हम अपने व्यवहार और सोच में बदलाव लाकर बहुत कुछ सुधार सकते हैं।

छोटे-छोटे प्रयास आप चाहें तो कर सकते हैं।

-अपने पड़ोसियों से मिलना-जुलना शुरू करें।

-त्योहारों और खुशियों को मिलकर मनाएं।

-जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे की मदद करें।

-परिवार के साथ समय बिताएं, साथ बैठकर बात करें।

-मोबाइल और सोशल मीडिया से थोड़ा समय निकालकर वास्तविक रिश्तों पर ध्यान दें।

बच्चों को सिखाना जरूरी–आज की पीढ़ी वही सीखेगी, जो वह देखेगी। अगर हम अपने बच्चों को रिश्तों की अहमियत नहीं सिखाएंगे, तो वे भी आगे चलकर इन्हें नजरअंदाज करेंगे।पहले का समय कुछ और ही था। रिश्तों में एक अलग ही मिठास थी, अपनापन था, और सबसे खास बात–दिलों में दूरी नहीं थी। उस दौर में पड़ोसी सिर्फ पास रहने वाले लोग नहीं होते थे, बल्कि वे परिवार का ही हिस्सा बन जाते थे।सुबह की शुरुआत अक्सर 'राम-राम' या 'नमस्ते' से होती थी। दरवाजे खुले रहते थे, और दिल भी। किसी को अगर चीनी, नमक या चायपत्ती की जरूरत पड़ जाए, तो बिना झिझक पड़ोसी के घर चले जाते थे। और पड़ोसी भी मुस्कुराकर मदद करते थे, जैसे यह उनका फर्ज नहीं, बल्कि खुशी हो। उन्हें यह समझना जरूरी है कि जिंदगी में केवल पैसा और सफलता ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि रिश्ते और अपनापन भी उतने ही जरूरी हैं।

ऊषा शुक्ला,
इफ़को आँवला बरेली यूपी

जनसंपर्क : संवाद का सूत्रधार, विश्वास का वास्तुकार

'विश्व जनसंपर्क दिवस' संवाद, विश्वास और पारदर्शिता की सार्वभौमिक आवश्यकता का उत्सव है। सूचना विस्फोट के इस युग में, जहाँ हर पल करोड़ों संदेश जन्म लेते हैं, जनसंपर्क वह सशक्त माध्यम है जो शोर के बीच अर्थ का सृजन करता है और संस्थाओं तथा जनता के बीच एक स्थायी सेतु का निर्माण करता है। यह दिन उन मूक रणनीतिकारों, लेखकों और संवाद विशेषज्ञों को समर्पित है, जो पर्दे के पीछे रहकर छवियाँ गढ़ते हैं, संकटों को संभालते हैं और कथाओं का शिल्प करते हैं।

जनसंपर्क को अक्सर प्रचार या विज्ञापन समझ लिया जाता है, जबकि यह उससे कहीं अधिक गहन एवं रणनीतिक विधा है। पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफ अमेरिका के अनुसार, 'जनसंपर्क एक रणनीतिक संचार प्रक्रिया है जो संगठनों और उनकी जनता के बीच पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंधों का निर्माण करती है।' यह मात्र सूचना का प्रसार नहीं, बल्कि समझ और समझौते का वैज्ञानिक एवं कलात्मक प्रबंधन है। इसके मूल में दो-तरफा संवाद निहित है–सुनना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कहना। एक कुशल पेशेवर समाज की नब्ज पहचानकर संस्था की नीतियों को उसके अनुरूप ढालने में मदद करता है, जिससे न केवल बाहरी छवि, बल्कि आंतरिक चरित्र का भी विकास होता है।

जनसंपर्क का इतिहास मानव सभ्यता जितना पुराना है। सम्राट अशोक के शिलालेख और स्तंभ, धम्म के प्रचार का उत्कृष्ट माध्यम थे और प्राचीन जनसंपर्क का परिष्कृत मॉडल माने जा सकते हैं। आधुनिक युग में, एडवर्ड बर्नेज और आइवी ली ने इसे अनुशासन का स्वरूप दिया। आइवी ली ने 1906 में 'जनता को सूचित करने' का सिद्धांत प्रतिपादित कर पारदर्शिता की नींव रखी। स्वतंत्र भारत में यह विधा सरकारी क्षेत्र से विकसित हुई–रेलवे, डाक विभाग और सूचना प्रसारण मंत्रालय इसके अग्रदूत रहे। उदारीकरण के पश्चात निजी क्षेत्र ने इसे हाथों-हाथ लिया और आज यह अरबों डॉलर का सृजनात्मक उद्योग बन चुका है।

जनसंपर्क विविध विशेषज्ञताओं का संगम है। मीडिया संबंध इसका सबसे दृश्यमान पक्ष है, जहाँ पत्रकारों से सकारात्मक संबंध बनाकर प्रेस विज्ञप्ति और वार्ताओं के माध्यम से संतुलित समाचार प्रवाह सुनिश्चित किया जाता है। संकट प्रबंधन इसकी अग्निपरीक्षा है–किसी विवाद या दुर्घटना के समय सत्य, संवेदनशीलता और सटीक समय पर किया गया संवाद प्रतिष्ठा को डूबने से बचा सकता है। आंतरिक संचार संस्था की पहली जनता अर्थात कर्मचारियों को जोड़ता है, उन्हें ब्रांड एंबेसडर में बदलता है। सामुदायिक संबंध और सीएसआर दायित्वपूर्ण व्यवसाय का संप्रेषण करते हुए साझा मूल्यों का सृजन करते हैं। और डिजिटल जनसंपर्क ने तो खेल के सारे नियम बदल दिए हैं–एक ट्वीट स्टॉक गिरा सकता है, तो एक वायरल रील स्थानीय उत्पाद को वैश्विक पहचान दिला सकती है। सर्च इंजन ऑप्टिमाइज़ेशन और डेटा एनालिटिक्स अब इसके अनिवार्य औज़ार हैं।

वर्तमान दौर जनसंपर्क के लिए अपार अवसर और गंभीर चुनौतियाँ लेकर आया है। फेक न्यूज़ और सूचनाओं के अतिप्रवाह में सत्य की प्रतिष्ठा ही इस पेशे की असली पूँजी है। एल्गोरिदम-चालित सोशल मीडिया ने जनता तक सीधी पहुँच दी है, लेकिन 'पेड ट्रेंड्स' और 'ट्रोल आर्मी' जैसी विकृतियाँ भी पैदा की हैं। सच्चा जनसंपर्क झूठ को सच नहीं बनाता, बल्कि सच को सरल और ग्राह्य बनाता है। अल्पकालिक लाभ के लिए किया गया तथ्यों का दमन दीर्घकालिक विश्वसनीयता को ध्वस्त कर सकता है। अतः प्रामाणिकता ही नवयुग का सर्वोत्तम रणनीतिक हथियार है।

भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक लोकतंत्र में जनसंपर्क एक चुनौतीपूर्ण किंतु रोमांचक क्षेत्र है। यहाँ संदेश को केवल अनूदित नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से स्थानीकृत करना अनिवार्य होता है। सरकारी जनसंपर्क का दायित्व है कि जनकल्याणकारी योजनाएँ अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक उसकी भाषा और मुहावरे में पहुँचें, और फीडबैक का सशक्त चैनल बने। कोविड-19 महामारी में टीकाकरण को लेकर भ्रांतियाँ दूर करने में इसने केंद्रीय भूमिका निभाई। वहीं स्टार्टअप इंडिया के इस दौर में, 'कहानी कहने की कला' छोटे उद्यमियों से लेकर यूनिकॉर्न तक सबके लिए अनिवार्य हो गई है। फंडिंग से लेकर ग्राहक आधार तैयार करने तक, सटीक और प्रेरक जनसंपर्क रणनीति ही सफलता की कुंजी है।

भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ढ्ढ) का हस्तक्षेप बढ़ रहा है। डेटा एनालिटिक्स, चैटबॉट और कंटेंट ऑटोमेशन में.ढ्ढ सक्षम है, लेकिन इस पेशे की आत्मा भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानवीय स्पर्श है। मशीन भावनाओं की जटिलता नहीं समझ सकती, न ही किसी संकट में आहत हृदयों को सांत्वना दे सकती है। अतः सफल पेशेवर वही होगा जो.ढ्ढ की दक्षता और मानवीय संवेदनशीलता के बीच संतुलन बनाएगा। साथ ही, पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक न्याय और समावेशिता जैसे विषय केंद्र में आ रहे हैं। अब जनता केवल उत्पाद नहीं खरीदती, बल्कि संस्था के मूल्यों से जुड़ना चाहती है, इसलिए सामाजिक सक्रियता पर आधारित जनसंपर्क का महत्व बढ़ेगा।

विश्व जनसंपर्क दिवस हमें स्मरण कराता है कि किसी भी समाज, सरकार या व्यवसाय की रीढ़ जनता के साथ संबंधों की मज़बूती में निहित है। यह केवल पेशा नहीं, बल्कि सामाजिक सद्भाव और प्रगति का दर्शन है। लेखक और प्रबंधक के रूप में मेरा मानना है कि जब शब्दों को ईमानदारी, रणनीति और सहानुभूति के धागे में पिरोया जाता है, तब वे केवल सूचना नहीं देते, बल्कि सभ्यता की दिशा मोड़ने की शक्ति रखते हैं। आइए, इस अवसर पर संवाद को और अधिक मानवीय, नैतिक तथा समावेशी बनाने का संकल्प लें–क्योंकि अंततः, जो दिखता नहीं, जनसंपर्क वही तो है, विश्वास का अदृश्य वास्तुशिल्प।

– शिव मोहन यादव
(बाल साहित्यकार, संपादक और आलोचक)
प्रकाशन प्रभाग, एनसीईआरटी कैंपस, अरविंदो मार्ग, नई दिल्ली – 110016
मोबाइल – 9616926050

टीसीएस ने बेंगलुरु में एनवीडिया के सहयोग से 'इंडस्ट्रियल एआई सॉल्यूशंस लैब' शुरू की

टीसीएस ग्लोबल एक्सिस कैंपस में बनी यह नई फिज़िकल एआई सुविधा, एनवीडिया एआई इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग करके एआई-संचालित मोबिलिटी और औद्योगिक समाधानों को तेज़ी से बढ़ावा देगी

बेंगलुरु, मुंबई, 15 जुलाई, 2026: सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं, कंसल्टिंग और व्यवसाय समाधान प्रदान करने वाली, वैश्विक स्तर की दिग्गज कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस (ङ्घष्टस्) (ङ्कस्ष्ः 532540, ह्रस्ष्ः ङ्घष्टस्) ने आज एक बड़ी घोषणा की है। कंपनी ने बेंगलुरु में अपने ग्लोबल एक्सिस कैंपस में 'एनवीडिया द्वारा संचालित टीसीएस ऑटोनॉमस इंजीनियरिंग लैब' की शुरूआत की है। यह नई लैब एक फिज़िकल एआई हब के रूप में काम करेगी। यहाँ एनवीडिया के एआई इंफ्रास्ट्रक्चर का इस्तेमाल किया जाएगा, ताकि मोबिलिटी और मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्रों में एआई पर आधारित आधुनिक समाधानों को तेज़ी से विकसित किया जा सके और उन्हें असल दुनिया में लागू किया जा सके।

यह अपनी तरह की पहली लैब है, जो कंपनियों को केवल प्रयोग करने के स्तर से आगे बढ़कर बड़े पैमाने पर 'इंडस्ट्रियल एआई सॉल्यूशंस' को तैयार करने, उनका परीक्षण करने और उन्हें जांचने में मदद करेगी। इसकी मदद से ग्राहक अलग-अलग उद्योगों के लिए नए आइडिया के शुरूआती मॉडल और उनका वर्चुअल ट्रायल बहुत तेज़ी से कर सकेंगे। इसके लिए वे टीसीएस के तकनीकी अनुभव और एक्सीलरेटर्स का फायदा उठा सकते हैं, ताकि इन समाधानों को असल दुनिया के मोबिलिटी, मैन्युफैक्चरिंग और फैक्टरी ऑपरेशन्स में सीधे लागू किया जा सके।

टीसीएस में इंडस्ट्रियल ऑटोनॉमी एंड इंजीनियरिंग के ग्लोबल हेड और वाइस प्रेसिडेंट, श्रीनिवास चक्रवर्ती ने कहा, 'बेंगलुरु लंबे समय से भारत की अर्थव्यवस्था का इंजन रहा है, और यह लैब उसी ऊर्जा का इस्तेमाल करके यह दिखाएगी कि एआई के ज़रिए क्या कुछ संभव है। एनवीडिया के शक्तिशाली एआई प्लेटफॉर्म और टीसीएस की इंडस्ट्रियल ऑटोनॉमी व इंजीनियरिंग क्षमताओं को एक साथ लाकर, हम एक ऐसा स्पेस बना रहे हैं जहाँ आइडियाज बहुत तेज़ी से कॉन्सेप्ट से निकलकर असल दुनिया में असर दिखाएंगी। यह लैब मोबिलिटी और इंडस्ट्रियल सिस्टम्स के भविष्य को एक नया आकार देगी। जैसे-जैसे हम अपने अगले चरण में कदम रख रहे हैं और अपनी साझेदारी को और मज़बूत कर रहे हैं, हम इसी रफ्तार के साथ और अधिक ग्राहकों के लिए बड़े पैमाने पर इन समाधानों को लागू करेंगे और पूरे बिज़नेस को बदलने का काम पूरे भरोसे और गति के साथ करेंगे। '

एनवीडिया में एआई कंसल्टिंग पार्टनर्स ऑर्गनाइज़ेशन के वाइस प्रेसिडेंट, एल्विन डिकॉस्टा ने कहा, 'कंपनियां जब अपने ज़मीनी और फिज़िकल कामकाज में एआई को लागू करने की कोशिश करती हैं, तो उन्हें वर्चुअल ट्रायल और असल दुनिया में उसकी तैनाती के बीच के अंतर को पाटने के लिए एक खास इंफ्रास्ट्रक्चर की ज़रूरत होती है। इस साझेदारी के ज़रिए, टीसीएस इंडस्ट्रियल ऑटोनॉमी एंड इंजीनियरिंग लैब पूरे एनवीडिया एआई प्लेटफॉर्म का फायदा उठाती है। इससे ग्राहकों को अपनी अगली पीढ़ी के औद्योगिक समाधानों को जांचने और उन्हें बड़े पैमाने पर लागू करने का एक सही रास्ता मिलता है। '

यह लैब कंपनियों को इंजीनियरिंग और मैन्युफैक्चरिंग के पूरे चक्र में एआई को शामिल करने में मदद करेगी। इससे वे अपने प्रोडक्ट्स, कामकाज के तरीकों और बिज़नेस मॉडल्स को बिल्कुल नए तरीके से तैयार कर सकेंगी। टीसीएस की 'इंडस्ट्रियल ऑटोनॉमी एंड इंजीनियरिंग' क्षमताओं के ज़रिए ग्राहक अपने प्रोडक्ट्स, फैक्ट्रियों और ऑपरेशनल सिस्टम्स में एआई को आसानी से जोड़ सकेंगे। इससे उन्हें अपने बिज़नेस को अधिक समझदार, सॉफ्टवेयर-संचालित और पूरी तरह से स्वायत्त बनाने में मदद मिलेगी।

'संस्कार, सत्संग और राष्ट्रधर्म : उज्ज्वल भारत के निर्माण का सनातन पथ'

पांगणा के शिव स्तुति महायज्ञ से बाल एवं युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक संदेशः-

हिमाचल प्रदेश की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नगरी पांगणा में आयोजित 11 दिवसीय शिव स्तुति महायज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, सनातन जीवन-दर्शन और राष्ट्रनिर्माण का जीवंत अभियान बनकर उभरा। महायज्ञ के दौरान सुप्रसिद्ध पुराण प्रवक्ता डॉ. दास महेश व्यास ने अपने ओजस्वी एवं प्रेरणादायी प्रवचनों में श्रद्धालुओं, विशेषकर बाल एवं युवा पीढ़ी को ऐसा जीवन संदेश दिया, जो आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'संस्काहीन शिक्षा समाज को पतन की ओर ले जाती है। केवल डिग्रियाँ नहीं, बल्कि चरित्र, संस्कृति और कर्तव्यबोध ही किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति होते हैं। ' आज विज्ञान, तकनीक और आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में मानव ने अभूतपूर्व प्रगति की है, किन्तु यदि शिक्षा के साथ नैतिकता, करुणा, अनुशासन, सेवा, सत्य और आत्मसंयम का समावेश नहीं होगा तो समाज का नैतिक आधार कमजोर पड़ जाएगा। इसलिए प्रत्येक परिवार, विद्यालय और समाज का दायित्व है कि वह बच्चों को केवल सफल नहीं, बल्कि संस्कारवान, चरित्रवान और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक बनाए।

डॉ. व्यास ने भगवान शिव और भगवान नारायण को सृष्टि के संरक्षण एवं लोकमंगल का प्रतीक बताते हुए कहा कि सनातन धर्म प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन का संदेश देता है। शिवलिंग पर श्रद्धापूर्वक अर्पित दूध की प्रत्येक बूँद केवल पूजा नहीं, बल्कि समस्त प्राणी जगत के कल्याण की भावना का प्रतीक है। भगवान नारायण संपूर्ण सृष्टि के पालनकर्ता हैं और प्रकृति का प्रत्येक कण उनकी दिव्य सत्ता का साक्षी है।

उन्होंने प्रकृति के अद्भुत रहस्य को सरल उदाहरण से समझाया कि एक ही मिट्टी, एक ही जल और एक ही सूर्य के प्रकाश में गन्ना मधुर रस देता है और मिर्च तीखी होती है। यह सृष्टि में व्याप्त परम चेतना और ईश्वर की अद्भुत सृजन शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वही महाप्राण प्रत्येक जीव के भीतर जीवन का संचार करता है। प्रवचन के दौरान उन्होंने राष्ट्रप्रेम का संदेश देते हुए कहा कि भारत केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि ऋषियों की तपोभूमि, संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना और विश्वकल्याण की भावना का प्रतीक है। उन्होंने भावपूर्ण स्वर में कहा–

'जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती हैं बसेरा, वह भारत देश है मेरा। '

उन्होंने कहा कि भारत की महानता उसकी आर्थिक सम्पन्नता से अधिक उसके संस्कारों, आध्यात्मिक परंपरा और मानवीय मूल्यों में निहित है। यदि नई पीढ़ी इन मूल्यों से जुड़ेगी, तभी भारत पुनः विश्व को दिशा देने वाला राष्ट्र बन सकेगा।

उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी की अमर वाणी 'शुभ करमन ते कबहूँ न टरूँ' का स्मरण कराते हुए युवाओं से आह्वान किया कि वे सदैव सत्य, साहस, धर्म और लोकमंगल के मार्ग पर अडिग रहें। कठिन परिस्थितियाँ ही मनुष्य के चरित्र की वास्तविक परीक्षा होती हैं।

प्रवचन का सबसे महत्वपूर्ण संदेश सत्संग की महिमा पर केन्द्रित रहा। उन्होंने कहा कि मानव जीवन असंख्य योनियों के पश्चात प्राप्त होने वाला दुर्लभ अवसर है। इसका उद्देश्य केवल धन, पद या भौतिक सुख प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, ईश्वर-भक्ति, सेवा और समाज कल्याण है। उन्होंने कहा कि जीवन की अधिकांश समस्याओं का समाधान सत्संग में छिपा है, क्योंकि सत्संग मनुष्य को स्वयं से और परमात्मा से जोड़ता है।

उन्होंने प्रसिद्ध उक्ति सुनाई–

'माया माया सब भजे, माधव भजे न कोय।
जो माधव भजे, तो माया दासी होय॥ '

अर्थात जो परमात्मा की शरण में जाता है, उसके लिए सांसारिक मोह बाधा नहीं, बल्कि साधन बन जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी की पंक्ति–

'संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय। '

का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि संतों का सान्निध्य और हरिकथा मनुष्य को जीवन की सही दिशा प्रदान करते हैं। यह सौभाग्य सभी को सहज उपलब्ध नहीं होता।

आज के सामाजिक परिवेश पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि माता-पिता बच्चों को सभी सुविधाएँ तो दे रहे हैं, किन्तु संस्कार देने का समय नहीं निकाल पा रहे हैं। बच्चों को बचपन से ही श्रम, सेवा, अनुशासन, बड़ों का सम्मान, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और परिवार की जिम्मेदारियों में सहभागी बनाना आवश्यक है। पुत्र और पुत्री दोनों समान रूप से परिवार और समाज की धरोहर हैं; उन्हें आत्मनिर्भर, संवेदनशील और कर्तव्यनिष्ठ बनाना ही वास्तविक शिक्षा है।

उन्होंने यह भी कहा कि मनुष्य का जीवन केवल स्वयं और अपने परिवार तक सीमित नहीं होना चाहिए। सेवा, त्याग, परोपकार और राष्ट्रहित की भावना ही जीवन की वास्तविक सफलता है। जो समाज अपने बच्चों को संस्कार देता है, वही भविष्य में सभ्यता और संस्कृति का नेतृत्व करता है।

प्रवचन के समापन पर श्रीरामचरितमानस की मंगलाचरण चौपाई–

'श्रीगुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि॥ '

का भावपूर्ण पाठ करते हुए उन्होंने गुरु, ज्ञान और भक्ति की महिमा का स्मरण कराया।

पांगणा की पुण्यभूमि से प्रसारित यह संदेश केवल एक धार्मिक आयोजन का सार नहीं, बल्कि वर्तमान और भावी भारत के लिए मार्गदर्शक है। यदि परिवारों में संस्कार, विद्यालयों में चरित्र निर्माण, समाज में सेवा और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना विकसित हो जाए, तो भारत का भविष्य सुरक्षित, समृद्ध और गौरवशाली होगा।

वास्तव में आज की सबसे बड़ी आवश्यकता आधुनिक संस्कारित शिक्षा और सनातन संस्कारों के समन्वय की है। शिक्षा बुद्धि देती है, संस्कार दिशा देते हैं; शिक्षा जीविका देती है, संस्कार जीवन देते हैं। यही संदेश पांगणा के शिव स्तुति महायज्ञ से संपूर्ण समाज, विशेषकर बाल एवं युवा पीढ़ी के लिए अमूल्य प्रेरणा बनकर सामने आया है।

दक्षिण भारत के सिद्धाचल श्री कुलपाकजी महातीर्थ के 1400 वर्ष पूर्ण होने पर देशव्यापी 'श्री माणिक्य स्वामी तप' का शुभारंभ

दक्षिण भारत के सिद्धाचल के रूप में विख्यात श्री कुलपाकजी महातीर्थ के 1400 वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसर पर 11 से 15 फरवरी 2027 तक आयोजित होने वाले 'श्री कुलपाक माणिक्यम् - 1400 वर्ष महामहोत्सव' की निर्विघ्न एवं सफल सम्पन्नता के निमित्त 28 जुलाई से 25 अगस्त 2026 तक संपूर्ण भारतवर्ष में सामूहिक 'श्री माणिक्य स्वामी तप' आराधना का आयोजन किया जा रहा है।

महामहोत्सव के प्रेरणाप्रदाता परम पूज्य राष्ट्ररत्न, सूरि सम्राट, अवंति तीर्थोद्धारक, खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन एवं पावन निश्रा में आयोजित इस तप आराधना का उद्देश्य अधिकाधिक श्रद्धालुओं को धर्म आराधना से जोड़ते हुए आगामी महामहोत्सव के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं सहभागिता का भाव जागृत करना है। इस अभियान के अंतर्गत देशभर से कम-से-कम 1400 आराधकों को इस तप आराधना से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इस तप आराधना में उपवास, 12 खमासमण, 12 प्रदक्षिणा, 12 स्वस्तिक, 20 माला जप, 12 लोगस्स, देववंदन तथा प्रतिक्रमण जैसी विविध धार्मिक आराधनाएँ सम्मिलित हैं। स्वयं तप करने के साथ-साथ अन्य श्रद्धालुओं को भी इस आराधना से जोड़ना एवं प्रेरित करना महान पुण्य का कार्य है।

महामहोत्सव के प्रधान संयोजक श्री बसन्त बाफना ने बताया कि श्री कुलपाकजी महातीर्थ वह पावन तीर्थ है, जहाँ मूलनायक भगवान आदिनाथ 'माणिक्य स्वामी' के रूप में विराजमान हैं तथा फिरोजा रत्न से निर्मित भगवान महावीर स्वामी की अद्भुत प्रतिमा श्रद्धालुओं की अगाध आस्था का केंद्र है। उन्होंने कहा कि 1400 वर्ष का यह महामहोत्सव केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि जैन धर्म की गौरवशाली परंपरा का ऐतिहासिक महापर्व है।

उन्होंने सभी जैन संघों, संस्थाओं एवं श्रद्धालुओं से इस ऐतिहासिक आध्यात्मिक अभियान में सक्रिय सहभागिता निभाने, अधिकाधिक आराधकों को 'श्री माणिक्य स्वामी तप' से जोड़ने तथा 'श्री कुलपाक माणिक्यम् - 1400 वर्ष महामहोत्सव' को ऐतिहासिक, भव्य एवं अभूतपूर्व सफलता प्रदान करने का आग्रह किया।